Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

देवनागरी लिपी मे अनुदित साहित्य

प्रा.डॉ.साळवकर उमांकात सिताराम
हिन्दी विभाग प्रमुख
नॅशनल कला व विज्ञान महाविद्यालय अंभई
ता.सिल्लोड जि.औरंगाबाद

भुमिका

साहित्य मनुष्य जिवन का एक महत्वपुर्ण अंग बन गया है। साहित्य से मनुष्य को एक नई दिशा प्राप्त होती है। आज आधूनीकता के आईने मे दलितो के विकास के लिए नए मुल्य को स्थापीत करना चाहिए जिससे सभी को समान न्याय मिले और उनके जीवन मे समता और समानता की लहर दौडे जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ती पीछडे वर्ग से समानता की भावणा प्रस्थापीत करे।

महाराष्ट्र की भूमि साहित्यीक, सांस्कृतीक दृष्टीसे इतनी सुजलाम, सुफलाम है कि यहा विकास होने मे अधिक समय नही लगता। मैने कई मराठी तथा हिंदी के उपन्यास निबंध कथाए पढे मेरी अभिलाषा को पुर्ण विराम रचनाकार वामनदादा कर्डक तथा अन्नाभाउ साठे इनके साहित्य मे ही मीला। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर इनके विचारोसे और संघर्ष से प्रेरणा लेकर दलितोध्दार आंदोलन में हजारो लाखो अनुयायियोने अपने आपको झोक दिया। इनमे रचनाकार वामनदादा कर्डक तथा अन्नाभाउ साठे इनका योगदान अन्योन्य साधारण है। अपना समस्त जीवन आंबेडकरी विचारोसे प्रासार–प्रचार में गीतो व्दारा समर्पित करने वाले महान रचनाकार है और यही गुण विशेष मुझे देवनागरी साहित्योमे अच्छा लगा।

देवनागरी लिपीः के संदर्भ मे

देवनागरी लिपी को कुछ विद्वान इस नामकरण की व्याख्या नागरी शब्द के माध्यम से करते है। इनमे से कुछ की मान्यता है, कि यह लिपी नगरो मे विकसीत होने के कारण देवनागरी कहलाई तो कुछ अन्य की मान्यता है। की गुजरात के नागर ब्राम्हणो के द्वारा प्रसीध्द होने के कारण यह लिपी देवनागरी कहलाई। कुछ विदवान मानते है, कि देवनागरी अर्थात काशी मे विकसीत होने के कारण यह लिपी देवनागरी कहलाई कुछ के अनुसार पाटली पुत्र के सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय देव की उपाधीसे विभूषीत थे उसके नगर पाटली पुत्र से विकसीत होने के कारण यह लिपी देवनागरी कहलाई।''[1]

इसका विकास ब्राम्ही लिपी से हुआ है। वर्तमान रूप ब्राम्ही का विकसीत रूप हैं। समय–समय पर देवनागरी लिपी नयी नयी ध्वनीया और उनके लिए नये–नये चिन्ह बना लिए गये। यही कारण हैं आज हमारी वर्णमाला एवं लिपी संसार की सबसे विकसीत वर्णमाला और लिपी मानी जाती हैं। स्पटता और व्यंजकता मे अन्य दुसरी कोई लिपी इसकी तुलना कर नही सकती। संस्कृती, हिन्दी, मराठी और नेपाली भाषाएँ इसी लिपी में लिखी जाती है ।

साहित्य और समाज

साहित्यकार समाज का चेतन और जागरुक प्राणी होता है। वह समाजके प्रभावसे अनभिज्ञ और अछुता न रहकर उसका अनभीन्न अंग होता है। उसके साहित्य मे समाज का प्रतिबिम्ब रुप दिखाई पडता

है। समाज का संपुर्ण अंग वास्तवीक रुप से प्रस्तुत होकर मर्मस्पर्शी होता है । इस दृष्टिकोण से साहित्य और समाज का परस्पर सम्बंध एक दुसरेपर निर्भर करता हुवा स्पष्ट होता है।

कवि और काव्य रुप

रविंद्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि यदि संसार का सर्वाधिक आनंद प्राप्त करना है। तो उसे कवि की आंखो से देखो समझो और अपनाओ। इससे स्पष्ट है की कवि की ऑख असाधारण प्रतिभासे संपन्न होती है। साधारण मानव संसार के भौतीक पक्ष को ग्रहण करता है। दार्शनीक तात्वीक पक्ष को परखता है। और कवि संसार के रसात्मक पक्षको देखता है ।

वामनदादा कर्डक मराठी साहित्य के श्रेष्ठ कवि रहे है। इन्होने माजराजनीती, मजदुरी, लाचारी आदि विषयोपर उन्होने कविता की है। साहित्य क्षेत्र मे उनकी अलग पहचान रही है। उनकी हिन्दी और मराठी कविता के माध्यम से अत्यंत सिमीत शब्दो मे किसी सांकेतीक कथानक को आती प्रभावशाली ढंगसे लाक्षाणिक अथवा अभिव्यंजना पध्दती से संप्रेषित किया जाता है। इनमे भाव प्रवत्ती अनुभुतिया की गहन एव तीव्र अभिव्यक्ती, भाव तरलता, गतिमयता, संक्षिप्तता ये कुछ ऐसे गुण है। तो हिन्दी तथा मराठी काव्य के लिए अनिवार्य है। भावो की गहनता एवं तीवता ही इसे काव्यमयता प्रदान करती है। इनमे भावपक्ष के तीव्र अतिरेक के साथ कला पक्ष का संतुलन बहुत ही आवश्यक है।

वामनदादा कर्डक के काव्यमे देश– प्रेम की उत्कंठ भावना दिखाई देती है। यह भावना देश के प्रशस्तिगान के रुप मे और दलित, शोषित पीडितो को बल प्रदान करने के उद्देश से विर भावना दिखाई देती है।

जवानो तनबदन और मन, वतन के वास्ते देदो
किसानो अन्न का कन कन वतन के वास्ते देदो
यहा फिरसे कोई रजपुत राणाजी सा पैदा हो।

गुरुगोविंदजी, रणजीतजी गाजीसा पैदा हो। अकेला हो हजारो मे बाजी प्रभुजीसा पैदा हो। वतन पे हो फिदा नरवीर नेताजीसा पैदा हो। शिवाजी बनके तुम दर्सन वतन के वास्ते देदो

उपर्युक्त पद मे राष्ट्रीय भावना देश के अतीम गौरव गान की कामना के रुप मे अभिव्यक्त हुई है। वर्तमान की दुरावस्था से चित्रीत व्यक्ती को अतीम वर्णन मे इसिलीए रत रहना चाहते है कि उसके द्वारा वर्तमान अपने देश के प्रती रजपुतराणा गुरु गोविंद रणजीत, सुभाषचंद्र बोस, बाजीप्रभु शिवाजी महाराज आदि को ऐतिहासीक संदर्भ देते हुए अभिव्यक्त हुई है।

वामनदादा कर्डक की कविताओ मे राष्ट्रीय भावना, मजदुर गुलामी, बुखमरी, बेरोजगारी और आर्थिक स्थिती पर उन्होने कविता की है। इनकी कविताओ मे राष्ट्रीयता का स्वर अधिक मात्रा मे विद्यमान है। राष्ट्रियता के इस प्रभाव की द्रष्टि सुधारवादी होने के कारण उनका दुष्टिकोन आदर्शोन्मुख रहा है। इन्होने भारतीय समाज मे दलित शाषित की स्थिती एव विषमता को प्रस्तुतकर इनमे लोकजीवन, जाति अंधश्रध्दा प्रचलित परम्पराओ का खंडन कर इन कुप्रथाओ पर इन्होने पुरुजोर प्रहार किया है।

साथही भारत के ग्राम्य संस्कृती उसका सौदर्य, एवं निवास करने वाली हिन – दिन कृषकश्रमिको की दिनचर्या, उनकी दुरावस्था लाचार जिवन आदि भी वामनदादा कर्डक ने अपने कविता का विषय बनाया है।

वामनदादा कर्डक इनकी रचनाए देश की अनेक पत्र– पत्रिका ओ में निरंतर प्रकाशित रही है। इनकी रचनाओ मे जहॉ समानता का यथार्थ उभरकर सामने आता है। वही उनकी कविताओ में वर्तमान का सच सहज रुप में उद्घाटीत होता है।

प्रकृती का चित्रण

वामन कर्डक ने एक कवितामे खेतोमे आई हुई फसल को देख कवि उसके सौदर्य मे खो जाते है।

हिरव हिरव रान माझ मोत्याच सार शिवार शंभर पोत्याच
कोवळया हराळीच, कर्दळी, केळीच नारळी, आंब्याच्या डहाळीच

उपर्युक्त कविता से यह प्रतीत होता है कि किसानो के प्रती एक विशेष आकर्षण है। जो कृषक जीवन के विविध रुपो को प्रकट करती है। हमारे देश की आत्मा गॉवो मे निवास करती है। उसमे रहनेवाले कृषक श्रमिको की दिनचर्या को अपनी कविता मे प्रकट करता है।

हिंदु मुस्लिम एकता पर

हिंदु मुस्लीम ऐक्य और जाती भेद के अन्मुलन द्वारा सभी वर्गो के लोगो में एक्य भाव की स्थापना मे वामनदादा कर्डक प्रयत्नशील रहे है ।

शिवरायाच्या छायेखाली मुळीच जळती वान आनंदाचे नांदत होती हिंदु मुसलमान काळया रात्री तळपत होत तिच्या रुपान उन अशी देखनी होती एका मुसलमानाची सुन त्या तरुनीला आई म्हणाला राजा तो शिलवान आनंदाने नांदत होती हिंदु मुसलमान बांधीत होता मशिद येथे आणि तिथे मंदीर त्या शिवाच्या चरणी झुकते अजुन माझे शीर अशा नराच्या पुतळया पाशी अजुन झुकते मान आनंदाने नादत होते हिंदु मुसलमान वामनदादा कर्डक ने छत्रपती शिवाजी महाराज के प्रती अपनी भावनाओ को प्रकट करते है। और साथही हिंदु मूसलमान एकता की याद दिलाते हुए सामाजीक विषमता को आकर्षित करते है।

आन्नाभाउ साठे साहित्य विशेष:

प्रतिकूल परिस्थिती मे अपना जीवन व्यथित करते हुए बौध्दीक लेखक के रुपमे आन्नाभाउ साठे इनका नाम मराठी साहित्य मे लेना होगा इन्होने साहित्य मे ''पोवाडे, 14, लोकनाटय, 14 कथासाहित्य 32 उपन्यास यह उनके साहित्य कि विशेषता है। इनके सात उपन्यासोमे मराठी सिनेमा को अपनी ओर खिचते हुए राष्ट्रीय पुरस्कार की ओर जा पहुॅचे। महाराष्ट्र आदोलने मे एकता का प्रदर्शन करते हुए लाखो लोगो को अपनी शाहिरी के माध्यम से प्रेरणा देणे वाले आन्नाभाउ साठे मराठी साहित्य मे छिन्न विछिन्न हुई अमानवीयता को मानवता मे बदलने का प्रयास उन्होने किया है। सामाजिक व्यवस्था जातिप्रथा के कारण दिर्घकाल से गुलामी की जनणी जाती व्यवस्था शोषको की यातना ओ को सहेज रही थी। वही आन्नाभाउ साठे जी के साथी थे। आम आदमी की पीडा उसका दु:ख दरिद्रयता, भुखमरी, बेरोजगारी पिढी परंपरा दरिद्रता का जीवन व्यतीत करनेवाली मातंग जाती में आन्नाभाउ साठे का जन्म हुआ अन्नाभाउ साठे के साहित्य से जो विचार प्रगट हुए वह शोषको पर प्रहार करने वाले और शोषितो के सम्यक परिवर्तन के लिए व्यापक है। अन्नाभाउ साठे ने सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत खेती करने वाला, मेहनत करनेवाला और मध्यम वर्गीय मनुष्य की द्यनीय स्थिती बन चुकी है। भारतीय समाज की संरचना पर

पाश्यात्य प्रभाव हुआ है। जीवन मे विविध स्तरो पर परिवर्तन हो रहे है। सामाजिक यथार्थ का चित्रण अन्नाभाउ साठे के साहित्यो मे दिखाई देता है।

राबून थंडी वा–यात गाळशी घामाच्या धारा लावीशी रास मोत्याची, परि नाही तुलारे थारा
तु मराठमोळा शेतकरी धोंगडी शिरी
जुनी ती काठी जुनी लंगोटी बदल दुनिया ही सारी
तु खाशी कांदा भाकरी बसुन अंधारी
झोपेला धोंडा भुकेला कोंडा बदल दुनिया सारी
तु खाशी कांदा भाकरी बसुन अंधारी
झोपेला धोंडा भुकेला कोंडा बदल दुनिया सारी

अन्नाभाउ साठे अपने साहित्य मे 'मराठमोळा' यह शब्द प्रयोग कर मराठा जाती के संदर्भ मे ना होते हुए वह मराठी भाषिकोके संदर्भ मे वह करते है। कृषक संस्कृती यह श्रमीको से संबधीत है। उपर्युक्त पदके पहले चरण मे कविने किसानोके इस अवस्था का विदारक रुप दर्शाते है जो आज हजारो किसानो की आत्महत्या का कारण है।

अन्नाभाउ साठे इनके सात उपन्यासो पर आधारीत फिल्मे बनी हुई है उनके 'वैजयंता' इस उपन्यास पर आधारीत ' वैजयंता ' यह फिल्म 1960 मे बनायी गयी पश्यात 'टिळा लावते मी रक्ताचा, 'डोंगराची मैना,' 'मुरली' मल्हारी, 'वारणेचा वाघ,' साता–याची त–्हा 'फकिरा,' यह फिल्मे बनी फकीरा इस फिल्म मे खुद अन्नाभाउ साठे इन्होने रोल किया है। इस दृष्टिकोन से मुझे देवनागरी साहित्य मे, साहित्य और समाज का संबंध एक दुसरे पर निर्भर हूवा स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।

संदर्भ

1. भंजनाचे भजन
2. क्रांतीकारी अन्नाभाउ साठे
3. बोल उठी हलचल
4. वामनदादा कर्डक गौरव ग्रंथ
5. इंटरनेट